...हुआ था। जिससे राजा, कार्यकारिणी, विधायनी और न्यायिक सभी शक्तियों का स्रोत ही नहीं बन गया था बल्कि एक छो- पदाधिकारी की नियुक्ति तथा मामूली से मामूली कार्य भी उनके अनुमति के बिना नहीं होती थी। मध्य युग में यूरोप के अन्य देशों में सामन्ती व्यवस्था का इस प्रकार विकास हुआ था कि राजा और महत्वपूर्ण वर्ग की विशिष्टता तो बनी रही पर शासन के क्षेत्रों में विकेन्द्रीकरण हुआ प फिर फ्रांस के शासक बदलते हुए परिस्थिति पर कोई ध्यान नहीं देकर केन्द्रीय सत्ता को बनाये रखना चाहते थे।

चौदहवाँ लुई ने जिस प्रकार के केन्द्रीकृत शासन का प्रारम्भ किया था, उसके लिए राजा का योग्य होना जरूरी था क्योंकि निरंकुश तंत्र में राजा का चरित्र बड़ा ही महत्वपूर्ण होता है लेकिन चौदहवें लुई के उत्तराधिकारी पन्द्रहवाँ व सौलहवाँ लुई दोनों अयोग्य थे इसलिए वे शक्ति के अधिक संकेन्द्रण को नहीं संभाल सके। सोलहवाँ लुई में न तो स्वयं निर्णय लेने की क्षमता थी और न ही दूसरे की सलाह मानने की। राज्य की समस्या में उसे कोई विशेष दिलचस्पी नहीं थी। एक के बाद एक कई मंत्रियों को नियुक्त किया परन्तु दृढ़ इच्छाशक्ति के अभाव में वह उनको अपना समर्थन न दे सका और किसी न किसी की शिकायत सुनकर उन्हें बर्खास्त करता रहा। उस पर उसकी रानी एन्तवानेत का बड़ा विनाशकारी प्रभाव था। जिसकी प्रेरणा से नहीं बल्कि दबाव में आकर राजा को काम काज करना पड़ता था। इस तरह राजनीति में रानी के अनुचित हस्तक्षेप के कारण वह षड्यंत्रकारियों के हाथ का खिलौना बन गया। फलतः शासन तंत्र अस्त-व्यस्त हो गया।

पुरातन युग की फ्रांस की राजनीतिक व्यवस्था में कोई संसदीय संस्था न थी परन्तु इंग्लैण्ड की पार्लियामेंट की तरह फ्रांस में भी एक संसदीय संस्था थी जिसे इस्टेट्स जेनरल कहा जाता था लेकिन 1614 ई० के बाद 175 वर्षों तक इसका कोई अधिवेशन नहीं हुआ और राजा मनमाने ढंग से शासन चला रहा था। व्यक्तिगत स्वतंत्रता का तो कोई नामो-निशान नहीं था। एक प्रकार का वारन्ट (लेटर द कैचे) जारी कर किसी व्यक्ति को कभी भी गिरफ्तार किया जा सकता था और बिना मुकदमा चलाये ही उन्हें कैद में रखा जा सकता था। सरकारी पदों पर नियुक्ति का आधार योग्यता न होकर वंश व क्रय शक्ति थी। ऐसे सभी कर्मचारी भ्रष्ट होते थे। राजकीय शासन व्यवस्था कई कार्यालयों संस्थाओं और एजेन्सियों की कई परतों से बनी थी जो स्पष्टतः परिभाषित नहीं थे। कभी-कभी उनका कार्य-क्षेत्र एक-दूसरे के विरोधी

होते थे। इनमें सामान्यतः असमानता व अयोग्यता व्याप्त थी जो उद्यमी व्यापारियों तथा छोटे-व्यापारियों के लिए विशेषकर कष्टकर थे।

फ्रांस की कानूनी व्यवस्था भी एकरूपता पर आधारित न थी। विभिन्न प्रकार के क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के कानून लागू थे। इन कानूनों के अनुसार जो बात एक जगह वैध मानी जाती थी, वही दूसरी जगह अवैध मानी जाती थी। इस कारण न्याय व्यवस्था के क्षेत्र में सर्वत्र अराजकता व्याप्त थी। प्रांतों पर केन्द्र का नियंत्रण ढीला पड़ गया था। संपूर्ण देश कई तरह की इकाइयों में बँटा हुआ था और अलग-अलग प्रांत में अपनी ऐतिहासिक विभिन्नता बनी हुई थी। इस प्रकार जिस भी दृष्टिकोण से देखा जाय पुरातन व्यवस्था की फ्रांस की राजनीतिक स्थिति एकदम गतिहीन हो चुकी थी। सारी व्यवस्था एक व्यक्ति व एक परिवार के हित में थी और शेष सभी समर्थ लोग अपने ढंग से अपने हित साधने में लगे हुए थे।

इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि फ्रांस की सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक दशाओं ने क्रांति लाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। क्योंकि क्रमशः तीनों क्षेत्रों में व्याप्त कुव्यवस्था, अस्त-व्यस्तता व अनुचित एवं बेजोड़ दूषित प्रणाली से फ्रांस में ऐसी विशृंखलता पैदा हो गई थी कि वातावरण एकदम अशांत सी हो गई थी। चारो तरफ असमानता, असंतोष व अन्याय का अंधकार छाया हुआ था। जिसे दूर करने के लिए तथा सदियों से धधकती ज्वाला को शांत करने हेतु लोगों ने क्रांति कर दी, जिससे उन्हें स्वतंत्रता, समानता और न्याय प्राप्त हो सके।

पुरातन व्यवस्था :- पुरातन व्यवस्था से तात्पर्य उस समाज और सरकार से है, जो फ्रांसीसी क्रांति के पूर्व विद्यमान थे। व्यवहारिक दृष्टि को ध्यान में रखते हुए हम पुरातन व्यवस्था से समाज और सरकार की उस स्थिति का अर्थ लेते जो फ्रांस में 1715 या उसके पश्चात् विद्यमान रही। फ्रांस में क्रांति का विस्फोट क्यों और कैसे हुआ? उसको समझने हेतु हमें वहाँ की सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक व्यवस्था को समझना होगा, जिन्होंने क्रांति की पृष्ठभूमि का काम किया।

The End

Bablu